

| | | |
|----|---|-----|
| ५ | मन्त्रे आन्यहोमेऽयुग्मानुवाकस्यान्नहोमे युग्मानुवाक्यस्य च व्यवस्थादर्शनं | ६१६ |
| ६ | रात्रिरूपहोमकालप्रशंसा | ६१६ |
| ७ | श्रुताय स्वाहेत्यनुवाकस्यान्नद्रव्यं निराकृत्य आन्य- द्रव्यस्य विधानं | ६१६ |
| ८ | आन्यहोमोक्तप्रथमानुवाकगतमन्त्रद्वयव्याख्या .. | ६१७ |
| ९ | आन्यहोमोक्तान्त्यानुवाकीयमन्त्रद्वयव्याख्या .. | ६१७ |
| १० | आन्यहोमोक्तान्त्यानुवाकीयशेषमन्त्रव्याख्या .. | ६१७ |

१६ अनुवाके पूर्वोक्तानुवाकस्य विस्तरेण व्याख्या ।

| | | |
|----|---|-----|
| १ | उक्तानुवाकद्वयव्याख्यानोपयोगिस्तुतिः | ६१८ |
| २ | उक्तानुवाकीयप्रथममन्त्रस्य प्रजापतिप्राप्तिहेतुतादर्शनं .. | ६१८ |
| ३ | उक्तानुवाकाम्नातसङ्ख्याविशेषानुपूर्व्यप्रशंसा | ६१८ |
| ४ | उक्तमन्त्रीयोत्तरोत्तरसङ्ख्यागतपूर्वपूर्वसङ्ख्यागर्भितत्व- प्रशंसा | ६१९ |
| ५ | प्रथमानुवाकगतसङ्ख्यासातत्यप्रशंसा | ६१९ |
| ६ | चरमानुवाकव्याख्याप्रपञ्चार्थमाद्यमन्त्रव्याख्या .. | ६१९ |
| ७ | उक्तानुवाकगततृतीयचतुर्थपञ्चममन्त्रतात्पर्यदर्शनं .. | ६१९ |
| ८ | उक्तानुवाकगतषष्ठमन्त्रव्याख्या | ६२० |
| ९ | उक्तानुवाकगतसप्तममन्त्रव्याख्या | ६२० |
| १० | समुद्रादिसङ्ख्याद्वारा तत्तत्सङ्ख्येयवस्तुप्राप्तिदर्शनं .. | ६२० |
| ११ | उघसे स्वाहेत्यादिमन्त्रद्वयव्याख्या | ६२० |
| १२ | उघसे स्वाहेत्यादिमन्त्राणां कालविशेषोक्तिः | ६२१ |